<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

14 नवंबर, 2017

<u>रणदीप सिंह सुरजेवाला, मीडिया प्रभारी, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने निम्नलिखित बयान जारी कियाः–</u>

मोदी सरकार आए दिन **'राष्ट्रहित'** व **'राष्ट्रीय सुरक्षा'** के साथ खिलवाड़ कर रही है। भारतीय वायुसेना के लिए लड़ाकू विमानों की खरीद में एक **'बड़े घोटाले'** की बू आ रही है। **सरकारी खजाने** को होने वाले नुकसान की गंभीर शंकाओं के सार्वजनिक होने के बावजूद सरकार इस पूरे मामले में साजिशी चुप्पी साधे हुए है।

मोदी सरकार द्वारा फ्रांस के डैसॉल्ट एविएशन से 36 'राफेल लड़ाकू विमानों' की खरीद में भारी अनियमितताएं सामने आई हैं। इस पूरे मसौदे की बिसात गैरपारदर्शिता; 'रक्षा सौदों की प्रक्रिया' में अनिवार्य प्रावधानों को ताक पर रखने; ट्रांसफर ऑफ टेक्नॉलॉजी में देशहित को छोड़ सरकारी पीएसयू, 'हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड' के अधिकारों को हानि पहुंचाने व अपने 'पूंजीपति मित्रों' को बेतहाशा फायदा देने पर बिछी है।

सर्वमान्य तथ्यः

I. **20.08.2007** : यूपीए सरकार द्वारा भारतीय वायुसेना के लिए 126 लड़ाकू जहाजों की खरीद का टेंडर जारी किया गया। व्यवसायिक मंत्रणा के बाद लड़ाकू जहाज बनाने वाली दो कंपनियों को शॉर्टलिस्ट किया गया – रफैल व यूरो फाईटर टाईफून।

II. **12.12.2012** : रफैल लड़ाकू जहाज US$10.2 बिलियन (2012 के एक्सचेंज के मुताबिक लगभग ₹54000 करोड़) के 'बेस प्राईस' के साथ एल–1 वेंडर बना। शर्तों के मुताबिक 18 लड़ाकू जहाज 'फ्लाई अवे कंडीशन' यानि फ्रांस में संपूर्णतः निर्मित हो वायुसेना को मिलने थे। 126 में से बाकी 108 लड़ाकू जहाज ट्रांसफर ऑफ टेक्नॉलॉजी के साथ भारत में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड द्वारा बनाए जाने थे। इसके अलावा एक शर्त यह भी थी कि कुल मसौदे की कीमत के बराबर का 50 प्रतिशत निवेश भारत में करना अनिवार्य होगा।

III. **13.03.2014** : हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड व राफेल बनाने वाली कंपनी डैसॉल्ट एविएशन में 'वर्क शेयर एग्रीमेंट' हुआ। इसके मुताबिक भारत में बनने वाले 108 लड़ाकू जहाजों का 70 प्रतिशत काम हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड द्वारा किया जाएगा व 30 प्रतिशत काम डैसाल्ट एविएशन द्वारा।

IV. **26.05.2014** : मोदी सरकार ने देश की सत्ता सम्हाली।

V. **10.04.2015** : प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी फ्रांस की यात्रा पर गए और वहां अचानक फ्रांस में निर्मित 36 राफेल लड़ाकू जहाज खरीदने के निर्णय की घोषणा कर डाली। न तो रक्षा सौदों की अनिवार्य प्रक्रिया को देखा गया और न ही किसी संस्था से राय मशवरा किया गया। हां, उस समय रिलायंस डिफेंस लिमिटेड के मालिक, श्री अनिल अंबानी जरूर पेरिस में प्रधानमंत्री मोदी के साथ मौजूद थे।

VI. **30.07.2015** : मोदी सरकार ने 126 लड़ाकू विमानों की खरीद का यूपीए सरकार के समय का टेंडर खारिज कर दिया।

VII. **23.09.2016** : मोदी सरकार द्वारा 36 राफेल लड़ाकू जहाजों की खरीद का लिखित समझौते पर दस्तखत किए जिनकी कीमत मीडिया खबरों व सार्वजनिक पटल पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार लगभग US$ 8.7 बिलियन निर्धारित हुई।

VIII. **03.10.2016** : श्री अनिल अंबानी की कंपनी रिलायंस डिफेंस लिमिटेड व रफैल लड़ाकू जहाज बनाने वाली डैसॉल्ट एविएशन में रक्षा उत्पाद बनाने बारे समझौता हुआ।

IX. **16.02.2017** : रिलांयस डिफेंस लिमिटेड की सब्सिडियरी व डैसॉल्ट एविएशन में भारत में एक ज्वाईंट वेंचर समझौता हुआ। कंपनी की वेबसाईट पर स्पष्ट लिखा है कि कंपनी 36 रफैल लड़ाकू विमानों के सौदे में 30,000 करोड़ का ऑफसेट डिफेंस प्रोडक्शन का काम कर रही है। इसकी कॉपी संलग्नक ए1 संलग्न है। इससे स्पष्ट है कि मोदी सरकार ने 36 रफैल लड़ाकू जहाज 60,000 करोड़ में खरीदने का सौदा किया।

<u>समय आ गया है कि प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी देश के लोगों को 5 सवालों का जवाब दें:–</u>

1. क्या कारण है कि मोदी सरकार 36 रफैल लड़ाकू जहाज इतनी महंगी कीमत पर खरीद रही है? क्या यह सही है कि यूपीए सरकार ने 126 रफैल लड़ाकू जहाज (ट्रांसफर ऑफ टेक्नॉलॉजी सहित) अमेरिकी डॉलर 10.2 बिलियन के बेस प्राईस पर खरीदने का मसौदा किया था? क्या यह भी सच है कि मोदी सरकार उन्हीं 36 लड़ाकू जहाजों को (ट्रांसफर ऑफ टेक्नॉलॉजी के बगैर) अमेरिकी डॉलर 8.7 बिलियन में खरीद रही है। क्या इसका मतलब यह नहीं कि मोदी सरकार द्व ारा निर्धारित कीमत के मुताबिक 126 रफैल लड़ाकू जहाजों की कीमत US$ 30.45 होगी और वो भी ट्रांसफर ऑफ टेक्नॉलॉजी के बगैर?

   क्या यह सही नहीं कि इस प्रकार से यूपीए द्वारा खरीदे जाने वाले एक जहाज की कीमत US$ 80.95 मिलियन (₹526.1 करोड़) आती, जबकि मोदी सरकार द्वारा खरीदे जाने वाले एक जहाज की कीमत US$ 241.66 मिलियन (₹ 1570.8 करोड़) आएगी? अगर यह सही है, तो राजस्व को हुई हानि का कौन जिम्मेदार है।

2. प्रधानमंत्री ने फ्रांस में निर्मित 36 रफैल लड़ाकू जहाजों को खरीदने का एकछत्र निर्णय कैसे लिया, जबकि रक्षा सौदों की अनिवार्य प्रक्रिया के अनुरूप यह संभव नहीं?

3. मोदी सरकार ने आज तक के देश के सबसे बड़े रक्षा सौदे में ट्रांसफर ऑफ टेक्नॉलॉजी, जो कि भारत सरकार की कंपनी हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड को मिल रही थी, दरकिनार क्यों किया? क्या यह राष्ट्रहित में उठाया गया सही कदम है?

4. क्या कारण है कि प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी एक औद्योगिक घराने यानि रिलायंस डिफेंस लिमिटेड की मदद कर रहे थे, जिसके नतीजन डैसाल्ट एविएशन द्वारा रिलायंस के साथ 30,000 करोड़ का डिफेंस उत्पादन समझौता कर लिया गया? क्या प्रधानमंत्री द्वारा पीएसयू, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के हितों की अनदेखी कर एक निजी कंपनी की मदद की जा रही है?

5. क्या रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में रिलायंस व डैसॉल्ट एविएशन के बीच हुए सबसे बड़े समझौते को रक्षा मामलों की कैबिनेट कमेटी, फॉरेन इन्वेस्टमेंट प्रमोशन बोर्ड व देश के मंत्रीमंडल से संस्थागत अनुमति मिली?